सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

(प्रथम सप्ताह) स्वमान - मैं व्यर्थ संकल्पों से मुक्त समर्थ आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच - वर्तमान समय प्रमाण बापदादा बार-बार इशारा दे रहे हैं कि अन्तिम समय अचानक आना है और अचानक के पेपर में पास होने के लिए विशेष दो बातों पर अन्डरलाइन करनी है। एक है व्यर्थ संकल्प से मुक्त और दूसरा है व्यर्थ समय से मुक्त। तो कैसे बनेंगे व्यर्थ समय और व्यर्थ संकल्पों से मुक्त ? **व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होने के इन महत्वपूर्ण सूत्रों पर ध्यान दें -**

1. व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए शुद्ध संकल्पों के खजाने को बढ़ायें और शुद्ध संकल्पों का आधार है रोज की मुरली।

2. **व्यर्थ संकल्पों का कारण है कमजोर मन। तो मन को शक्तिशाली बनायें। मन सशक्त होगा जब रोज सारे दिन में कम से कम आठ बार पाँच स्वरूपों की ड्रिल करेंगे।**

3. व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए तीन बातें छोडनी है और तीन बातें धारण करनी है। परचिन्तन को छोड़ स्वचिन्तन करना है। परदर्शन छोड़ स्वदर्शन करना है। परमत और मनमत को छोड श्रीमत पर चलना है।

4. **व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए सदा स्वमान में रहें, क्योंकि स्वमान की कमी से अभिमान उत्पन्न होता है और जहां अभिमान है वहाँ अपमान की बहुत जल्दी फीलिंग होती है।**

5. व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए सदा पॉजीटिव सोचें। यदि किसी भी कारण से निगेटिव संकल्प चले तो अपने से पूछे कि निगेटिव सोचने से कुछ फायदा है ? यदि नहीं तो मैं क्यों सोच रहा हूँ ?

6. **व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए ड्रामा के ज्ञान को यूज़ करें। ड्रामा की हर सीन में कल्याण है, क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ और साथ है।**

7. व्यर्थ संकल्प को खत्म करने के लिए श्रीमत की लगाम टाइट करें। चेक करें अमृतवेले से लेकर रात्रि तक हमारा हर कर्म श्रीमत प्रमाण रहा ? और यदि नहीं तो क्यों ?

8. **व्यर्थ संकल्प को खत्म करने के लिए ब्रह्माबाप समान रोज मन की चेकिंग करें। स्वमान की सीट पर बैठकर मन को अपने आर्डर प्रमाण चलायें।**

9. व्यर्थ संकल्प को खत्म करने के लिए सदैव यह स्मृति में रखें कि मैं ब्रह्माबाप समान हूँ.. अत: मुझे अपने हर संकल्प ब्रह्माबाप समान रखने हैं।

10. **व्यर्थ संकल्पों का कारण है भय। भय का कारण है झूठ। इसलिए अन्दर में सच्चाई सफाई हो। यदि कोई भूल हो जाए तो बाबा को सच सुनाकर स्वयं को हल्का कर दें।**

11. सहनशक्ति को बढ़ायें सदैव याद रखें कि सहन करने की आज्ञा किसने दी है ? मैं सहन नहीं कर रहा हूँ, लेकिन परमात्म आज्ञा का पालन कर रहा हूँ।

12. व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए अपने सारे बोझ, चिन्ताये बाप को देकर स्वयं लाइट रहें, बेफिकर बादशाह बनकर रहें।

13. **व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए सदैव याद रखें कि मै सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूँ। व्यर्थ संकल्प चलाना यह भी अपवित्रता है।**

(द्वितीय सप्ताह) स्वमान - मैं शुभभावनाओं के वायब्रेशन्स फैलाने वाली आत्मा हूँ

शिव भगवानुवाच – ''मन्सा सेवा – रूहानी वायरलेस सेट है। सर्वश्रेष्ठ मंसा शक्ति द्वारा चाहे कोई आत्मा सम्मुख हो, समीप हो वा कितनी भी दूर हो – सेकेण्ड में उस आत्मा को प्राप्ति की शक्ति की अनुभूति करा सकते हैं। मंसा शक्ति किसी आत्मा की मानसिक हलचल वाली स्थिति को भी अचल बना सकती है। मानसिक शक्ति अर्थात् शुभभावना, श्रेष्ठ कामना, इस श्रेष्ठ भावना द्वारा किसी भी आत्मा के संशय बुद्धि को भावनात्मक बुद्धि बना सकते हैं।

इस श्रेष्ठ भावना से किसी भी आत्मा का व्यर्थ भाव परिवर्तन कर समर्थ भाव बना सकते हैं। श्रेष्ठ भाव द्वारा किसी भी आत्मा के स्वभाव को भी बदल सकते हैं। श्रेष्ठ भावना की शक्ति द्वारा आत्मा को भावना के फल की अनुभूति करा सकते हैं। श्रेष्ठ भावना द्वारा भगवान के समीप ला सकते हैं। श्रेष्ठ भावना किसी आत्मा के भाग्य की रेखा बदल सकती है। श्रेष्ठ भावना हिम्मतहीन आत्मा को हिम्मतवान बना देती है। इसी श्रेष्ठ भावना की विधि प्रमाण मंसा सेवा किसी भी आत्मा की कर सकते हो।''

मंसा सेवा कौन कर सकता है – मंसा सेवा वही कर सकता है जिसकी स्वयं की मंसा अर्थात् संकल्प सदा सर्व के प्रति श्रेष्ठ हो, नि:स्वार्थ हो। पर-उपकार की सदा भावना हो। अपकारी पर भी उपकार की श्रेष्ठ शक्ति हो। सदा दातापन की भावना हो। कोई आत्मा कमजोर है, नहीं कर सकता है, फिर भी रहम की भावना, सदा सहयोग की भावना, हिम्मत बढ़ाने की भावना हो। इसको कहा जाता है–मंसा सेवाधारी। मंसा सेवा एक स्थान पर स्थित रहकर भी चारो ओर की सेवा कर सकते हो। वाचा और कर्म के लिए तो जाना पड़े।

योग का प्रयोग – अपने श्रेष्ठ अनादि स्वरुप ज्योति स्वरुप को देखें.....फिर अनुभव करें कि मैं आत्मा इस साकार देह व साकार दुनिया से ऊपर आत्माओं के देश परमधाम में महाज्योति शिव के सम्मुख पहुंच गई.....ऊपर समस्त विश्व की आत्माएं परमात्मा पिता के साथ उल्टे वृक्ष के सदृश्य स्थित हैं.....मैं परमात्मा शिव के साथ उस पूरे कल्पवृक्ष को पवित्रता-सुख-शांति के वायब्रेशन्स दे रही हूँ.....मेरे वायब्रेशन्स विश्व की हर आत्मा रूपी पत्ते की पालना कर रहे हैं.....हर आत्मा मेरे इन वायब्रेशन्स से शक्तियां व गुणों की अनुभूति कर रही है.....।

सभी को साकार लोक में भी आत्मिक दृष्टि से देखें.....आत्मा देखते हुए हर आत्मा की विशेषताओं को देखें.....हर आत्मा आपसे मंसा, कुछ न कुछ चाहे वह शांति हो...या शुभभावना हो...या कोई विशेष शक्ति की प्राप्ति करके ही जाए.....सदा दातापन का भाव मन में रखें.....।

तीव्र पुरूषार्थियों के प्रति – प्रिय बाप समान बनने वाली आत्माओं! आने वाले समय में और कोई सेवा नहीं कर पाएंगे सिर्फ मंसा सेवा ही की जा सकेगी। अत: अभी से यह अभ्यास करने की अत्यधिक आवश्यकता है।

अमृतवेले और नुमा शाम के योग के अवसर पर विशेष रूप से मंसा सेवा का अभ्यास करें...दिन भर में भी थोड़ा समय अवश्य निकालें और संसार की दु:खी-अशांत आत्माओं को सुख-शांति की अंचली दें।

मन को ... -पेज 12 का शेष

की भी जरूरत होती है।

प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. वसवराज ने कहा कि ओमशांति के महामंत्र से हर क्षेत्र मे हमें सफलता मिलती है। खेल धर्मनिरपेक्ष है अतः भाईचारा स्थापित करने में सहयोगी है। खिलाड़ी अगर पैसे के पीछे भागना बंद करें और व्यसनों से मुक्त रहे तो उनका जीवन वैसे ही मूल्यवान बन जाएगा। आध्यात्मिकता को अपनाने से वे बुराइयों से बच कर रहने का बल प्राप्त कर पाएंगे।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.शशि ने कहा कि समय की पुकार है मूल्यनिष्ठ जीवन। एकाग्रता में वृद्धि सफलता के लिए आवश्यक है। राजयोग का अभ्यास मन को एकाग्र करता है। मूल्यों के बिना हम अपनी सफलता को अक्षुण्ण नहीं रख पाते।

प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.जगबीर ने कहा कि आगामी ओलंपिक में विभिन्न स्पर्धाओं में भाग लेने वाले देश के खिलाड़ियों को मेडिटेशन का त्रिदिवसीय प्रशिक्षण देने की हमने योजना बनाई है। माइंड पावर को दिशा देकर हम खिलाड़ी अपेक्षित सफलता प्राप्त कर पाएंगे। हमारा प्रशिक्षण पूर्णतः नि:शुल्क है। उक्त अवसर पर मेजर ध्यानचंद जी के पुत्र अशोक ध्यानचंद जी ने भी अपने उद्गार प्रकट किये। ब्र.कु. तारा ने मंच का संचालन किया।

मुम्बई-योगेश्वरी। अंध विद्यालय में मुस्लिम भाइयों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.मीरा।

गुलबर्गा। शारना बसवप्पा अप्पा महापीठाधिपति,सारन संस्थान को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

भटिण्डा। विधायक स्वरूप सिंगला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कैलाश साथ हैं ब्र.कु.कृष्णा।

भीलवाड़ा। कलेक्टर ओंकार सिह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.अनिता।

अबोहर। डी.एस.पी.राजकुमार जल्होत्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.पुष्पलता साथ हैं ब्र.कु.दर्शना, ब्र.कु.सुनिता, ब्र.कु.राजसदोष तथा राजेश सचदेवा।

अली राजपुर। जैन साध्वी प्रयाग जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

चन्द्रपुर। शहर के ट्रैफिक पुलिस ऑफिसर्स को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कुंदा ।

राजगढ़। वक्फ बोर्ड के सदस्य अजीज मौलाजी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.मधु।